ओ३म्

परमात्मा जयति ।

धर्मसन्ताप

रचयिता—

लाला जगन्नाथदास जी

मुरादाबाद ।

चतुर्थवार १००० | सं० १९७१ वि० सन् १९१४ ई० | मूल्य)॥ १॥) सैकड़ा

Printed and Published by B. D. Misra at the Brahma Press Etawah-
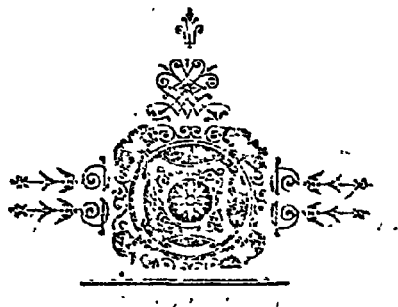
* श्रीहरिः *

धर्मसन्ताप ॥

आगया अब घोर कलियुग, धर्म्म को सन्ताप है।
पुण्य का अंकुर मिटा, विकसित जहां तहां पाप है॥
नाम तो सत्यार्थ है, और उसमें मिथ्यालाप है।
हाय! विद्वानों ने भी, स्वीकारकी चुप चाप है॥ १॥
पूर्व ऋषि मुनियों ने जो कुछ, धर्म्म का निर्णय किया।
कलियुगके अज्ञों ने उसे, मिथ्या ही मिथ्या कहदिया॥
सत्यको विध्वंस करके, क्या खलोंने यश लिया।
जिसने बढ़ाया असत्को, चिरकाल वहफिरनहिंजिया॥२॥
सृष्टि के आरम्भ में, ब्रह्मा हुए विख्यात है।
मंत्र ब्राह्मण उपनिषत्, इतिहास में यह बात है॥
अग्नि वायु की कथा, स्वामी जी का उत्पात है।
अज्ञता उनकी है इसमें, या कोई यह घात है॥ ३॥
एक स्त्री को लिखा, दश मर्द से करना नियोग।
गर्भिणी भी पर पुरुष से, चाहे तो भोगे ये भोग॥

३-वेदद्वारप्रकाश देखो।

हो पति परदेश में, पत्नी करै औरों से योग।
स्वामीजी की बुद्धिपर, रोवें न क्यों विद्वान् लोग ॥४॥
होम करना मांस से, देखो लिखा सत्यार्थ में।
और गोवध की लिखी है, आज्ञा सत्यार्थ में ॥
मांस भक्षणकी भी पुष्टि है वृथा सत्यार्थ में।
देखले अपने गुरू की, अज्ञता सत्यार्थ में ॥ ५ ॥
मांस भोजन की हो पुष्टि, है प्रबल कलि का प्रताप।
लोप है सत्कर्म का, और प्रकट है सर्वत्र पाप ॥
सज्जनों के हृदय में. अष्टप्रहर है येही ताप।
आर्य्य कहलाकर करें हैं, धर्म्म का क्यों नाश आप ॥६॥
सब मनुज सब देश से, स्त्री ग्रहणका है विचार।
वर्णसंकर होगया, वर्जित नहीं भंगी चमार ॥
ऐसे उपदेशों से बतलाओ, तो क्या होगा सुधार।
हास्य वैदिक धर्म्म का तुमने किया है सब प्रकार ॥७॥
आध मन घी से मृतकका, लिखते हैं वह दाह कर्म्म।

४ ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका पृष्ठ २१४ दूसरे सत्यार्थ० का पृष्ठ ११९-१२० देखो। ५ पहले सत्यार्थका पृष्ठ ४५ तथा पृष्ठ २०३-३०२। ६ समाज का एक दल पुष्टि करता है। ७ दूसरे सत्यार्थ० का पृ० ९७ देखो० ॥

और नहीं तो डालना, मुरदे का है जंगल में धर्म्म ।
चील कउवे खायंगे, हा ! आर्य्योंका मांस चर्म्म ।
वुद्धिमानों को तो ऐसा, कहने से आती है शर्म्म ॥८॥
भस्म को मुरदे की बाग़, और खेत में डलवाइये ।
खात माता और पिताके, पिंड का बनवाइये ॥
वेद में यह कहां लिखा है, हमको भी बतलाइये ।
जो नहीं पाते तो अपने, मनमें ही शरमाइये ॥ ९ ॥
वेद के अतिरिक्त पुस्तक, सत्य जो नहीं जानते ।
तो दिखावें वेद में, हमको जो हैं वे मानते ॥
सत्य तो यह है कि जो, नहीं सत् असत् पहिचानते ।
धर्म्म के विपरीत सबसे, युद्ध हैं वे ठानते ॥ १० ॥
वेद में हैं किस जगह, दिखलाये सोलह संस्कार ।
सिद्धकर सम्यक् उन्हें, तूने लिखा है जिस प्रकार ॥
संहिताओं ही से कर, वलिवैश्व सन्ध्या का विचार ।
सत्य की जय है सदा, झूठे की है सर्वत्र हार ॥ ११ ॥

---

८ पहिली संस्कार विधि पृ० १४१

९ पहिली संस्कार विधि पृष्ठ १५०

१० दयानन्द जी ने केवल चार शाखाओं को वेद माना है उन्हीं में अपने सब मन्तव्यों को दिखावें ।

नाम जिस कन्या का हो, पर्वत नदी या वृक्ष पर।
त्याग उसका क्यों लिखा, स्वामी ने तेरे बुद्धिवर॥
वेद की आज्ञा है ऐसी या है इस में युक्ति तर।
क्या बुराई उसमें आई, कहिये तो कुछ सोचकर॥ १२॥
वेद में जो सर्व सम्मत ही, तुझे स्वीकार है।
तो कुरान इंजील तुझ को, वेद के अनुसार है॥
मत तेरा बस नास्तिकता, का प्रकट भण्डार है।
जो कोई ऐसा कहे, वह बुद्धका अवतार है॥ १३॥
भूमिका में है तेरी, वेदोत्पत्ति का प्रकार।
फिर कहा उनको अनादि, बस इसी पर कर विचार।
स्वामी जी की बुद्धि पर, छाया था कैसा अन्धकार।
कुछ विरोध उनको न सूझा अज्ञताकी थी ये मार॥१४॥
शूद्र के सुत में जो होवे, कर्म उत्तम वर्ण का।
और उत्तम वर्ण का सुत, शूद्र सम होवे पढ़ा॥
उनका हो बदला ये है, स्वामी की तेरे आज्ञा।
सोचले मनमें कि आयेगी, विपत्ति इससे क्या॥ १५॥

---

१२ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ८०। १३ दूसरा सत्यार्थ० पृष्ठ ३८२। १४ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका पृष्ठ ६, २७। १५ दूसरा सत्यार्थ० पृष्ठ ८६।

आचमन कफ पित्तकी, शान्ति को बतलाई दवा।
मार्जन से नष्ट हो भय नींद और आलस्य का।
हो न केशों का पतन, है इस लिये बन्धन शिखा।
वाह क्या तेरे गुरुने, की है अद्भुत व्याख्या॥ १६॥
होम का फल वायु शुद्धि, स्वामी ने तेरे लिखा।
सत्य है उसका कथन, तो मन्त्र पढ़ना है वृथा॥
सोच तो बलिवैश्व का ठट्ठा उड़ाया उसने क्या।
लोप सत्कर्मों का बस, करना उसे स्वीकार था॥ १७॥
पाप बिन भोगे नहीं छुटता, है यह कहना अशुद्ध।
हैं वचन उनके ही ग्रन्थों में, अनेक इस के विरुद्ध॥
सत्य के निर्णय की हो इच्छा, तो कीजे वाक् युद्ध।
लेख को क्यों देखकर, मेरे वृथा होता है क्रुद्ध॥ १८॥
पहले सब ग्रन्थों में अपने, मुक्ति सुख अक्षय लिखा।
छागया अज्ञान तब, गाने लगे उलटी कथा॥
शुभ अशुभ कर्म्मों का जिनके, नाश सम्यक् हो चुका।
क्यों उन्हें बन्धन में डालेगा, पुनः परमात्मा॥ १९॥

---

१६ पञ्चमहायज्ञविधि पृष्ठ ६–४–५ तथा दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ४१। १७ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ४२ पहला सत्यार्थ पृष्ठ ४३। १८ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ३२२ तथा ३७८। १९ मुक्तिप्रकाश देखो

जेलख़ाना, और फांसी सम, लिखा मुक्ति को . हा ! ।
नास्तिकता इस से बढ़ कर, और बतलाओ है क्या ॥
जो नरक और स्वर्ग से, लोकों को भी नहीं मानता ।
अज्ञता उसकी छुपाने से, छुपे क्योंकर भला ॥ २० ॥
वह है ईसाई की सदृश, जिसने कटवाई शिखा ।
तो शिखा छेदन की दी, क्यों आपही ने आज्ञा ॥
सब के उपवासों को जब, सत्यार्थ ने झूठा कहा ।
क्यों लिखे उपनयन में, उपवास फिर तू ने बता ॥२१ ॥
शूद्र तक को तो नमस्ते का कथन स्वीकार है ।
और नमः शिव के लिये, कहना बुरा आचार है ॥
स्वामी जी महाराज का, प्रत्यक्ष वाम विचार है ।
वेद के विपरीत उनका, सर्वथा व्यवहार है ॥ २२ ॥
ग्रन्थ भाषा में हैं जितने, जो हैं सब मिथ्या भला ।
तो तेरे स्वामी की भाषा, सत्य हो कैसे बता ॥
सत्य तो यह है कि है, सत्यार्थ झूठा सर्वथा ।
हमने उसकी सैकड़ों, तुझको अशुद्धि दी दिखा॥ २३ ॥

---

२० दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ २४१ तथा ५१० । २१ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ३७६ तथा २५८ और पहिली संस्कार विधि पृष्ठ ४८ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ४३१ पहिली संस्कारविधि पृष्ठ ५६ में देखिये । २२ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ५४६ यजुर्वेद अध्याय १६ । में नमः शिवाय लिखा है। २३ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ७१ ।

हो असत्मिश्रित जो सत्, वह सत्यहै अब विष समान।
तो तू अपने स्वामी का, सब लेख अनादरणीय मान॥
उसके ग्रन्थों में तुझे स्वीकार है अनृत निदान।
छोड़ दे अब सर्वथा उनको, जो है तू बुद्धिमान्॥ २४॥
आठ रात्री कहते हैं, निन्दित जो गर्भाधान में।
आगया अज्ञान कैसा, स्वामी जी के ज्ञान में॥
अर्थ मनु के श्लोक का भी जो न आया ध्यान में।
फिर बता कैसे कहूं, उसको भला विद्वान् मैं॥ २५॥
सृष्टि के गत शेष वर्षों की जो, कुछ गणना लिखी।
दो करोड़ और लाख उनसठ, से अधिक है वां कमी॥
वेद की शाखाओं में भी, है अशुद्धि वेद (४) की।
स्वामीजी महाराज की, क्याही विलक्षण बुद्धि थी॥२६॥
वाहरे गणितज्ञ तुझ को, धन्य कहिये बार बार।
दिन लिखे सौ वर्षके जो, तीन लाख और साठहज़ार॥
बुद्धिमानो सत् असत् का, कीजियो सम्यक् विचार।
स्वामीजी की पुस्तकों में, तो अशुद्धि हैं अपार॥२७॥

---

२४ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ७२। २५ पहिली संस्कार विधि पृष्ठ १३। २६ ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ २३–२४ दूसरा सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ५८७। २७ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ २४०। २४१

भागवत में है कहां; पृथ्वी को राक्षस लेगया ।
और प्रल्हाद अक्रूर की गाई है झूठी कथा ॥
रोहिणी को भार्य्या वलदेव जी की लिखदिया ।
ऐसे गप्पी के कथन पर हो भला विश्वास क्या ॥ २८ ॥
चार वेदों में कहां है मन्त्र गायत्री वता ।
जो तू सच्चा है तो चौथे वेद में मुझको दिखा ॥
है नहीं छान्दोग्य में य; मनु श्रुति का पता ।
रत्न संन्यासी को दे ऐसा कहां मनुने कहा ॥ २९ ॥
वेद और वेदांगके पाण्डित्य का अभिमान था ॥
जीवों की उत्पत्ति लिखी यहां तक उन्हें अज्ञान था ॥
स्वामीजी को सत् असत्का कहिये कुछ भी ध्यानथा ॥
वह तो साधु थे उन्हें श्वेत और कृष्ण समान था ॥३०॥
जैनियों ने विष दिया शंकरको यह मिथ्या लिखा ।
और शिव मन्दिर में है चुम्बक की भी झूठी कथा ॥
शूद्र था जानश्रुति यह कैसा अनृत लिख दिया ।
है प्रकट वेदांत से तेरे गुरू की अज्ञता ॥ ३१ ॥

---

२८ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ३३३ तथा ३३४ पहला सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ १०७ । २९ पञ्चमहायज्ञ विधि पृष्ठ २६ फिर पहला सत्यार्थ पृष्ठ १४७ और दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ १३५ । ३० पह० सत्यार्थ पृष्ठ २३२ । ३१ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ २८७।३१६।२३६

जो लिखी पृथ्वी की परिधी उसमें भारी भूल है ।
तेरे स्वामी का कथन सिद्धान्त के प्रतिकूल है ॥
घूमना भूमी का जो उसने लिखा निर्मूल है ।
जो कि हैं वेदज्ञ उनके हृदय में यह शूल है ॥ ३२ ॥
साम में श्यमाद्धि द्वादश श्रती दिखलाइये ।
ब्राह्मणस्य विजानतः किस वेद में है बताइये ॥
हैं प्रते इत्यादि कहां ऋग्वेद में समझाइये ।
मेरे सन्मुख बात झूठी भूलकर न बनाइये ॥ ३३ ॥
भागवत की है नहीं हेमाद्रि में कुछ भी कथा ।
देखकर उस ग्रन्थ को संदेह तू अपना मिटा ॥
वोपदेव ऐ देव श्रीजयदेव का भ्राता न था ।
गद्य में दोनों का हमने लिख दिया पूरा पता ॥ ३४ ॥

---

३२ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ ४६० देखो । सिद्धान्त शिरोमणि गोलाध्याय दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ २२८ सिद्धान्त शिरोमणि गोलाध्यायमें (भूश्चला स्वभावतः) लिखा है अथर्ववेदमें ध्रुवा पृथ्वी ऐसी श्रुति है ॥

३३ पहली संस्कारविधि पृष्ठ ३२ दूसरा सत्यार्थ पृष्ठ १२६ पहली संस्कारविधि पृष्ठ ३१ । ३४ दूसरा सत्यार्थ पृ० ३३५

पंचविंशो श्लोक सुश्रुत के शरीरस्थान में।
लिखते हैं स्वामी जी कहिये ज्ञान या अज्ञान में॥
किस लिये फूला फिरे है तू वृथा अभिमान में।
आके मेरे सामने कर बात कुछ मैदान में॥ ३५॥
दूध घी बकरे का स्वामी ने जो तेरे लिख दिया।
सृष्टि क्रम विपरीत कहिये यह कथन कैसा किया॥
ऐसे अज्ञानी का होकर शिष्य क्यों अपयश लिया।
छाग का घी दूध किसने जगत् में खाया पिया॥ ३६॥
स्वामी जी को भांग पीने का बहुत अभ्यास था।
मनमें जो आया लिखा कब सत् असत् का पास था॥
क्या उन्हें सद्धर्म का करना कहीं उपहास था।
स्यात् कलि महाराज का उनके हृदय में वास था॥३७॥
घुस गये स्वामी जी जिसमें है वह नंदीगण जहां।
सत् असत् का उनके निर्णय चलके अब करलो वहां।
है बड़ा आश्चर्य हम को बस यही मित्रो यहां।

---

३५ दूसरा सत्यार्थ पृ० ४६

३६ यजुर्वेद भाष्य अध्याय २१ मन्त्र ४३ के पदार्थ में।

३७ देखो दयानन्दजी जीवनचरित्र दलपतराय कृत पृष्ठ५८ से ६० तक।

मूर्ती पाषाण की में पोल ऐसा है कहां ॥ ३८ ॥
रीछ ने खाने को स्वामी जी के मुंह खोला था जब ।
आये थे दो कोण से उनके सहायक वन में तब ॥
है ये सम्भव या असम्भव कोई बतलाये तो अब ॥
जानलो गप्पाष्टक स्वामी की बातें गप्प सब ॥ ३९ ॥
मूर्ती पूजक के आदर का निरादर कर दिया ।
वर्ष पैंतालीस तक वह अन्न से किसके जिया ॥
जिनको गोवध करते देखा उनसे ही सीधा लिया ।
तुही कह स्वामी ने तेरे काम यह कैसा किया ॥ ४० ॥
नाम में उस के दया थी और दया से हीन था ।
नाम को संन्यास था और धन में मन लवलीन था ॥
नाम का वदिक था पर वह वेद के न अधीन था ।
सत्यका निर्णय न था मत उसका तेरह तीन था ॥४१॥
दे मेरी बातों का उत्तर जिस को कुछ अभिमान हो ।
दूर जिस से स्वामी जी महाराज का अज्ञान हो ॥
छोड़ दे झूठे गुरू को जो कि बुद्धिमान् हो ।
पक्षपात और हठ दुराग्रहपर न जिसका ध्यान हो॥४२॥

---

३८ उक्त जीवन चरित्र पृष्ठ ६०
३९ उक्त जीवनचरित्र पृष्ठ ६१-६२
४० उक्त जीवनचरित्र पृष्ठ ६५ तथा ३७-३८

हठ दुराग्रह छोड़कर सद्धर्म ही में प्रीति कर।
प्रीति कर भगवान् से शिष्टों की अपने रीति कर॥
रीति कर सच्छास्त्र की प्रतिकूल से तू भीति कर।
भीति कर अन्यायसे तनमनसे निशि दिन नीतिकर॥४३॥
बस जगन्नाथ अब शरण परमात्मा की लीजिये।
रात दिन तन मन से अपने ध्यान उसका कीजिये॥
है महाविष असत् उस को दूर से तजदीजिये।
सत्य रूपी अमृतही को प्रीतिपूर्वक पीजिये।।४४।इति

अथ वेदसारशिवस्तवप्रारंभः।

श्रीगणेशाय नमः। पशूनां पतिं, पापनाशं परेशं गजेंद्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्। जटाजूट मध्ये स्फुरद्गांगवारि महादेवमेकं स्मरामि स्मरामि॥१॥ महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्। विरूपाक्षमिंद्वर्कवह्नित्रिनेत्रं सदानंदमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्॥२॥ गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेंद्राधिरूढं गुणातीतरूपम् भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं भवानीकलत्रंभजे पंचवक्त्रम्॥३॥ शिवाकांत शंभो शशांकार्धमौले महेशान शूलिञ्जटाजूटधारिन्। त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप॥४॥ परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं

निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम् । यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम् ॥५॥ न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वायुर्न चाकाशमास्ते न तं द्रान निद्रा । न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्त्तिं तमीडे ॥ ६ ॥ अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम् । तुरीयं तमः पारमाद्यंतहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम् ॥ ७ ॥ नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्त्ते नमस्ते नमस्ते चिदानंदमूर्त्ते । नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य ॥ ८ ॥ प्रभो शूलपाणेविभोविश्वनाथ महादेव शंभो महेश त्रिनेत्र । शिवाकांत शांत स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः ॥ ९ ॥ शंभो महेश करुणामयशूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन् । काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि ॥१०॥ त्वत्तो जगद्भवतिदेव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ । त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिंगात्मके हरचराचरविश्वरूपिन्॥११॥

इतिश्रीमच्छंकराचार्यविरचितंवेदसारशिवस्तोत्रं संपूर्णम् ।